त § [त] दन्त.स्थानीय व्यन्जन वरण विशेष; (भ्रा प्रामा) ।
स [तत्] वह; (ठा ३, १; है १, ७ ; कप्प ; कुमा) ।
, तःस त्वत्] तू। कक्ष नि. कृत] तेरा किया हुआ;
तद् (अप्) अर [तत्र] वहाँ, उसमें ; (षद्) ।
तड् श्र [तदा] उस समय ; (प्राप्र) ।
तइअ वि [तृतीय | तीसरा ; (हे १, १०१ ; कुमा) ।
तदअ (अप) वि [त्वदीय] तुम्हारा ; (भवि) ।
, तम्र [तदा] उस समय; | (॥
^भशिभ्रो रत्ना मती, मइसागर तय पव्वयंतेग |
` ताएण ब्रं भणिग्रो, भगिणी ठाणम्मि दायव्वा"'
| (सुर १,१२२)।
तइअहा (अप) अ [तदा] उस समय ; (भवि ; सण) ।
तइआ भ्र [तदा] उस समय ; (हे ३, ६६ ; गा ६२) |
तइआ खी [तृतीया] तिथि-विशेष) तीज ; (सम २६) ।
` तदलं देखो तेल्ल ; (उप ४९४) ।
तइलोई खी [त्रिखोकी] तीन लोक--स्वर्ग, मय' और पाताल;
(खषा ६८) । १
` त्लोक्क | न [श्रैलोक्ष्य] ऊपर देखो; (पडम ३,
तइलोय । १०५ ; =, २०९; सं ४७१ ; सुर ३; २०
सुपा २८९१ ; ३६ ; ४४८) |
तदस (भप) वि [तादश] वैसा, उस तरह का; (द
1111111
.... तई खी [रथी] तीन का समुदाय ; (सुपा ६८) |
तईअ देखो तइअ-तृतीय ; (भा ४११ ; भग) 1
तंड } न [अपु] धातु-विरोष, सीसा, रगा; (सम
तउ । १२९; बोप; उप ६८६ दी; महा) । "वह्धिभां |
खी [“पिका] कान का आभूषण-विशेष + (दे ५,२३)।
तडस न [त्रपुष] देखो तउसी ; (राज) । “मिंजिया
ली [मिड्जिका] तद्र कीट-विरोष, श्रीन्दिय जन्तु की
एक जाति ; (जीवं १) ।
तडसी खी [अपुषी] ककटी-उक्त, खीरा का गाछ (गा 2३४)।
तए व्र [ततस्] उससे, उस कारण से ; २ बाद में; (उत्त
१३५ विपा १,१)। ५
तपयारिस वि [त्वाद्रश] तुम जैसा, तुम्हारी तरह कां ;
९) |

(8०. है... पाइमसइमह
` वणय हु [दे]बाय-विशेष ; (दे ५, १६) । |
... लुण्णण न [तुन्नन] फटे हुए नख का सन्धान ; (उप प
(1१11 ◌ |
लुण्णाग[हुं [तुननवाय] वस को सधने वाला, रफू करने | ठ
सण्णाय.) वाला; (गदि; उप १२१०; महा) ।
तुण्णिय वि [तुन्नित] रफू किया हुधा, सधा हुआ; (बृह१)। | तं
तुण्हि अ [तूष्णीम्] मौन, चुपकी ; (भवि)। १.
तण्हि ए [दे] सकर, सूझर ; (दे ५, १४) । तु
तण्डि) वि [तूष्णीक] मौन रहा हुआ; (प्रप्र ;गा |
वि ३८४ ; सुर ४, १४८) । तु
लुण्हिकक वि [दे] सदुनिशल ; (दे ६, १६) ।
तुण्हीअ देखो तुण्दिअ ; (स्वपर ४२) ।) ते
तुत्त देखो तोत्त ; (सुपा २३५) । तु
तद देखो तभ । तुदए ; (षड्)। वकृ-तुदं; (विवे त
१४७० } । तु
तप्प इुं [दै] १ कौतुक ; २ विवाह, शादी ; ३ सर्षप, सरसों, |
धान्यविशेषः ४ कुतुप, थी शादि भरने का चर्म-पात्र ; (दे, त
९२) । ५ वि..भक्तित, चुपड़ा हुआ, षी भादि से लिप्त; (देश, | `
३९; कय; गा ३९ ; २८६ ; हैं १, २००) । ६ स्निग्ध, |
सनेद-युक्त ; (दे ४, २२ ; प्रोष ३०७ भा) |. जन् | त
इत, दी; (से १५१ ३८ ; सुपा६३४ ; कमा) । | तु
ए वि[दे] बीले लिप्त; (गा ६२०)) | ।
तुप्पकिभ + | तं
तुमंतुम हुं [दे] कोध-झत मनो-विकार विशेष ; (ठा | तु
प्तप ४४१) | | (
तुमुल पु [तुमुल] १ लोम-हषण युद्ध, भयानक संग्राम ; | तु
(शङ्ख) । २ न, शोरगुल ; (पाश्र) । |
व्ह स [युष्त्] ठम, झाप ; (हे१, २४६) । | ॥
तुम्हकेर नि [त्वदीय] तुम्हारा ; (कुमा) । (५
तुम्हकेर वि [युष्मदीय] झापका, तुम्हारा ; (है १,२४६ ; त
१,१४०.१ । |
तुम्हार (भप) ऊपर देखो ;(मत) । 1. | व
लुम्हारिस्र वि [युष्माहश] आप के जेसा, तुम्हारे जैसा ; | तु
(है १, १४९ ; गउड ; महा) । ॥,/ 1
तुम्हेच्चय वि [यौष्माक] आपका, तुम्हारा; (ह २,१४४; तु
| ही ^

यह भक [त्वग्+वृत्] पार्श्व को माना, कलट ¦ 1
फिराना । तुय + (कत ; भग) । तुये, तन्ना ; `

(भग ; भप) । दे --तुयहित्तए ; (आचा) । ह--
ठयद्धियव् ; (याया १,१ ; भगः; रौप) ।

[यट्टण न [त्वग्बतेन] पार्श्व -परिवतन, करट फिराना; (ओष

१६२ भा; झौप) । 1)
[यट्टावण न [त्वग्वर्त न] करवट बदलवाना । (आचा)।
यावइसा देखो तुभ । |

र अकं [त्वर्] त्वरा करना, शीघ्रता करना । चछरंत, `
तुरंत, तरमाणः, तुरेमाण, (हे ४,१७२; प्राय ५८षद्) |

रंग पुं [कुरङ्ग] अध, बोड़ा ; (कुमा; प्राच् ११७)
र रामचन्द्र का एक खुभद ; (पठम ५६, ३८) 1 । |
रंगम पुं [वरङ्गम] अश्व, घोड़ा ; (पा ; पिंग) । |
रंगिआ ली [तुरङ्गिका] घोड़ी ; (पा) ।

रंत देखो तुर ।

रक्क ५ दे. तुर्क] १ देश-विशेष, तुरकिस्तान ; २ अनाय
जाति-विशेष, ठकं ; (ती १४) |

गग देखो तुराय ; (भय ११,११ ; राय) । मुह 4 [मुख] ।
नायं देश-विशेष ; (सूझ २,१) । शेदग पुं [भेदक]

नायं देश-विशेष ; (सृ १, 2, १) ।. '

रमाण देखो तुर ।

रय 4 [तुरग] १ अश, षोढा; (पड १,५)| २:
नदःविशेष ; (पिंग) । हपिंजरण न [-देहापञ्जरण]

ग्व को सिंगारना ; (प्रत्र) । देखो तुरग | `

} ली [त्वरा] शीघ्रता, जल्दी; (दे ६१६)
॥। वंत वि ["बत्] त्वरायुक्त; त्वरा बाला ; ।

षे ४, ३०)।

रिभ वि [त्वरितं] १ त्वरा-ुयुक्त,उताबला ; (पाद्म; हे |
१७२} औऔप ; प्राप्न) । २ क्रिवि, शीघ्र, जल्दी; (खषा ‰
४६४ ; भवि) । गह वि [गति] १ शीघ्र गति बाला । ३ `

[, अमितगति-नामक इन्द्र का एक लोकपाल; (या ४, १)। ६
रिथ वरि [तुयं] चौथा, चतुथं ; (सुर ४, २८० ; कम्म

६६ ; छपा ४६४) । “निदा ली ["निद्रा] मरण-

शा; (उपश्रु १४३) ।

रि न [तूये] वाय, वादित्र ; “तुरियाणं संमिनाएग,

व्वेणं गगणं फुल” (उत्त २२, १२) ।

रिमिणी देखो तुरूमणी ; (राज) ।

तिस [दें] १ पीन, पुष्ट; ९ शस्या का उपकरण, (३५,२२)। |

ह ~-1/1 ॥11111ह
(पष्य तनक [कन 1)
त्थ देखो थवनस्तृत ; (षे १,१)। | ¦ |
श्त्थडड देखो धञ्ड ¦ (गञड)। । | । } ।\ 1/
'त्थंब देखो थंब ; (चारु २५)। । ^ 11
पत्थंभ देखो थम; (कमा) ` `. |
` यण् देखो; (वा १०) | 1111 | । । ^
'हथस देखो 9 (पि ११५) 1111 141
“न्थंखं देखो धल ; (काप्र ८४) ` | (11
त्थी देखो थली ; (पिरत) 11} ` | , 1
“त्थतं देखो थबननस्तु । व्छ--^त्थवंत ; (नार)। ¦
त्थक्भ देखो थक्रय ; (पे १, ४० ; नारं) |.
त्थाण देखो थाण ; (नाद) । ¦ | ◌̇
^त्थार देखो थार ; (कमा) । ` ॥॥॥
"त्थिम देखो थिअ ; (गा २१)1; | 1;
“स्थिर देखो धिर ; (कमा) । `)
°त्थोअ देखो थोअ ; (नाट--वेणी २४)।
, $ सिरिपाइअस दमसहण्णवम्मि तयाराषसहसंकलणे ` '
| (तेवीसइमी तरंगो समो । `
थ पुं [थ] दन्त-स्थानीय व्यन्जन-विरोष ; (प्राप; प्रामा) |
` थश, १-९ वाक्यालंकार शऔर पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया
जाता अन्यय ; “किं थ तयं पहु जं थ तया भो जयंत पव-
रम्मि" (णया १, १---पत्र १४८; पचा ११) 1
रथ देखो पत्थ ; (गा १३१; १३२ ; कस) ।
थइअ वि [स्थगित] ब्रच्छादित, दका हुमा; (से ५,
2५१११५), 0 [^ |
यदम) सी [स्थभिका] पानदानी, पान रखने का पाल ;
न (महा) । त्त पु ["वत्] ताम्बूल-पाल-वाहक
नौकर; (कपर ५१)। घर पुं [“धर्] ` ताम्बूल-पात्र का
| वादक नौकर ; (छपा १०४.) 1 “वहग पुं [वाहक]
पानदानी का वाहक नौकर ; (सुषा १०७) ।.देलो थगियः ।
यद्रा सी [दै] येली, कोली ; ““संबलथश्◌ मासणाहो?
“ ` ““दक्षिया संवलत्यई (१३) या” (कपर १२; ८०.) 1
थद्डं देखो थय = स्थगय् । : ` : `

थडउड न [स्थपुट] १ विषम् और उन्नत प्रदेश ; (दे २,
७८)।२वि. नीचानऊँबा ; (ग्ड) 1 ``:'
_थडडिअ वि [स्थपुटिंत] 5 विषम श्र उन्नत प्रदेश
वाला । २ नीचा-कँचा प्रदेश बालाः; (गउड) ।
थडड न [दे] मल्लक, इत्तविशेष, भिलावा; (दे ५,२६)।
थंडिल न [स्थण्डिल] १ शुद्ध भूमि; जन्तुरहित प्रदेश ;
(कस ; निचू ४)। र क्रोध, गुस्सा ; (च्म १,.६) ।
थंडिल्ल न [स्थण्डिल] शुद्ध भूमि ; (खपा ५४८ ; आचा),
शंडिल्ल न [दे] मडल, वतत प्रदेश ; (दे ५, २५) ॥ `
थंत देखो था । +) 4.00
थव वि [दै] विषम, भ-रम ; (दे ४, ४ } । । । ¦ |
थंब पुं [स्तम्ब] वृण आदि का गुच्छ; (दै <४६) |
झोष ०७१ ; ग्र २९३) । 1
थंस अक [स्तम्भ्] १ सकन, स्तन्ध होना, स्थिर होना,
निश्चल होना । २ सक. श्रिया-निरोध करना, अटकानां ;
रोकना, निश्चल करना । थंभइ ; (भवि)। कमं ७
. यमिञ्जईः (है २, ६) । सछ--यंमिडं; (इतर २८६ ११
थंभ प [स्तस्म] १ स्तम्भ, थम्भा; (हेर, ६; कमा; |
प्रास ३३)। २ रभिमान, गवं, अहंकार ; (सूझ १, १३;
उत्त ११) । "विज्जा स्त्री ["विद्या] स्तब्ध करने की
विद्या ; (खपा ४६३) | | ५/1
थंभण न [स्तम्भन] १ स्तन्ध-करंण, थर्मौना ; (विते
३००५७ } सुपा. ५६६.) 1. २ स्तन्ध करने का मन्त्र;
(खपा ५६६)। ३ गुजरात का एकं नगर, जो ग्राजकले
'खंभात' नाम में प्रसिद्ध है ; (ती ५१) । धुर न [चुर्]
नगर-विरेषर, खंभात ; (सिग्ब १) । .. :
थंभणया खी [स्तम्भना] स्तन्ध-करणः. { ठा ४,.४) ।
थंमणी खी [स्तम्भनी] स्तम्भन करने बाली विद्या-विशेष ;
01 १९11८) 40
थंमय देखो थंभ = स्तम्भ; (कुमा) ! `
थंभिय वि [स्तम्भित] १ स्तन्ध किया हुझा, थमाया हुआ;
(कुप्र १४१; कुमा; कप्प ; भ्नौप) । २ जो स्तन्ध हुआ हो,
व्टभ्ध; (स ४६४) 1 ' । ॥
धक्क ` अकं [स्था] रहना, बैठना, स्थिर होना | ' थक्केड् ;
(है ४,.१६ ; पिंगे) । भवि--थक्किस्सड ; (पि २३०६)
क्क अक [फक्क्] नीचे जाना} थक; हि ४,८७) } .
थक्क अंक [श्रम्] थकना, श्रान्त होना । थक्कति; (पिंग।

ये वि [स्थेय] १ रहने योग्य ; २ जो रह सकता हो ; ३.
पुं फैसला करने वाला, न्यायाधीश ; (हे ४, २६५)। |
थेग पुं [दे]कन्द-विरोष ; (श्रा २०; जी ४)
थेज्जञ न [स्थैर्य] स्थिरता; (बते १४)। |
चेक्ज देखो धेम ; (वव २) 1 / ।/ ' ।
येण पु [स्तेन] चोर, तस्कर ; (है १,१४५)।
थेणिल्लिअ वि[दे] १ दूत, छीना हुआ ; २ भीत, रा
| दुआ ; (दे ६, ३२) । ॥ (1111
थेप्प देखो थिप्प | येष्यद् ; (पि २०७ ; संक्षि ३४) ।
थेर वि [स्थविर | १ वृद, बूढ़ा; (है १, १६६; २, 8;
मग ६, ३३) । २ पर, जैन साधु; (भरो १७ ; कप्प) ।
"कप्प पु [कल्प] १ जेन सुनिग्रो का झाचार-विशेष, गच्छ
भ रहने वाले जन मुनिश्नों का अनुष्ठान ; २ आआचार-विशेष कां
प्रतिपादक ग्रन्थ ; (ठा ३, ४ ;झोघ ६७०)। “कप्पिय
। | पुं["कटियिक] आचार विशेष का राय करने वाला, गच्छ
| मै रहने बाला जेन सुनि; (पव ७०) । भूमि ली [भूमि]
स्थविरकाष्द्; (३, २)। भवलि पुं [वलि]
१ जैन मुनिशनों का समूह ; २ क्रम से जैन सुनि-गण के चरित्र
का प्रतिपादक प्रन्थ-विरोष ; (शांदि ; कप) | `
थेर [दे, स्थविर] ब्रह्मा, विधाता ; (दे ४, २६; पार्म)।
औरास्रण न [दे] पदभ, कमल; (दे ४, २६) ।
| येरि न [स्थैयै] स्थिरता; (डमा) ।
थेरिथा| सी [स्थिरा] १ वृद्धा, बढ़िया ; (पा ;
थेरी | ओघ २१ दी) । २ जैन साध्वी ; (कप) ।
थेव पुं[दे] बिन्दु ; (दें ४, २६ ; पाद्म; षद्) ।
थेवं देखो थोब; (है २, १२५ ; पात्र; सुर १, १८१) ।
"कालिय बि ["कालिक] ्रल्प काल तक रहने वाला ;
(छुपा ३५५) ।
थेवरिअ न [दै] जन्म-तमय में बजाया जाता वराय; (दे
४, २६) ।
थो देखो थव; (हे २, १२५; गा ४६; गउड; संक्षि १) ।
थो प [हि] १ रजक, धोबो; २ मूलकः मूला, कन्द विशेष;
(दे ५,३२))।
थोभव्व } देखो थुण ।
थोऊण |
'थीक्क) देखो थोच ; (है २, १२५ ; जो १) ।

| थोदेख्य देखो चारय ; (उ ७र८ दी)1 | ~
| थोत्त न [स्तोत्र] स्तुति, स्तव ; (हेर, ५५; सुषा २६६) ।
शोभ|प [स्तोभ,'क] "व, पे" भादि निरथक भ्रन्यय का
थोभय | प्रयोग ; "उय-तकारो इत्ति य कारणा थोभृया
हुति" (बृहः११ विते ९९९ दी)। /¦ / '
| थोर देखो थु ; (हे१, २५५ ४ २,९९. ; परम २, १६;
0/1 ॥॥|॥ 11 |
थोर वि [दे] कम से विस्तीर्ण अथच गोल; (दे ४, ३०;
वज्जा ३६)।) .
थोल पुं [दे] बख्र का एक देश ; (दे ४, ३९) ।
थोब) वि[स्तोक] १ अल्प, थोड़ा ; (हे २, १२५;
५ उव; श्रा २७; ओघ २६६ ; विते ३०३०) ।
पु, समय का एक परिमाण ; (ठर, ३;भग)।.
थोह न [दे] बल, पराक्रम ; (दे ५, ३०) ।
शोहर पुंखी [दै] वनस्पति-विरोष, थूहर का पेड़, सेदुंड ; (छा
२०३) । खी-- री ; (उप१०३१ टी जी १०; धर्मरे)। `
इ सिरिपादथखदमहण्णवम्पिं थयाराघ्रसदूसंकलणे .
चउन्वीसदमो तरंगो समतो ।
नमन ® 4
(1 ¦
द् पुं [दे] दन्त स्थानीय व्यब्जन-वर्ण विशेष ; (पराप ; प्रामा)|
द्थच्छर ए [दे] प्राम-स्वामी, गाँव का अधिपति; (दे
६, ३६)।
दभरी खली [दै] खरा, मदिरा, दारू ; (देश, ३४) ।
दद खी [दूति] मसक, चर्म-निर्मित जल-पात्र ; (ओष रे८) ।
दद वि [दे] रक्तित ; (दे ५, ३५) ।
दथ वि [द्वित] १ प्रिय, प्रेस-पात; "जननो वरंकांमिणी-
दभ्र? (घुर १, १८३) । २ भमी, वान्छति; "अम्हाण
मणोदद्यं देसणमति दुल्लहं सन्ने (सुर ३, ३३८) । २ !
4, पति, स्वामी, भता ; (पाञ्म; कुमा) 1 "यम वि [तम]

| न ॐ; ९ $, पति, मत ; (पम ५७, ६२)।
द्या ली [दयिता] खी, प्रिया, पत्नी ; (कुमा ; मदा ;
सुर ४, १२६.)।
दइच्च पुं [दैत्य] दानव, अर ; (हे १, १५१ ; कुमा ;
पा) । गुरु हुं [गरु] शुक ; (प्रच्र)1 `
दइन्न न [दैन्य] दीनता, गरीबपन ; (हे १, १६१.) ।
द्व पन [देव] दैव, भाग्य, दृष्ट, प्रारमध, पूर्व-कत कर्म ;
(हे १) १५३ ; कुमा ; महा ; प्रम २८, ६.०) । "प्रह्वा
कुविभो दषवो पुरिसं किं हण लयडेग" (छुर् =, ३४) ।
"ज्ज, 'ण्णु ए [ज्ञ] ज्योतिषी, ज्योतिःशाख का विद्वान ;
(हे २, ८३; षद्)। देखो देवदेव ।
दश्चय न [दैवत] देव, देवता; (पण्ड २,१ ; हे १, १६१;
कुमा) ।'
ददतिग वि [दैविक] देव-संबन्धी, दिव्य ; (स५०६.) ।
देष्व देलो द्व; (हे१, १५३; २,६६; कमा;
परम ६३, ४) ।
दउद्र | [दिकोदर] रोग-विशेष, जलोदर, पानी से पेट का
+.....दुओोदर . पलना; (णाया१, १३; विपा १,१)॥
दमओभास $ [दकाचमास] लवण-समुद्द मँ स्थित
बेलंघर-नागराज का एक झावास-पर्वत ; (इक) ।
दंखा देखो दाढा ; (नाट-- मालती ५६) ।
दंठि वि [दंष्टिनि_] बड़े दाँत वाला, हिंसक जन्तु; (नाट-- `
वेणी २४) । ॥ |
दंड सकं [दण्डयू] सजा करना, निम्रह करना । काक्र -- `
` दंडिज्जंतः; (प्रास ६६)।
दंड प [दण्ड] १ जीव-हिसा, प्राण-नाश ; (सम ; णाया
१५ १३ ठा१) । २ अपराधी को अपराध के अनुसार शारीरिक
या र्थिक दगड, सजा, निग्रह, दमन; (ठा. २,३; प्राच £ ३;
हे १,१३४) | ३ लाटी, यष्टि; (उप ५३०. दी; भ्रा
४४) । ४ दुःख-जनक, परिताप-जनकं ; (झाचा) ।
& मन, वचन भर शरीर का अशुभ व्यापार ; (उत्त १६ ;
दं ४६) ६ छन्द-विशेष; (पिंग)। ७ एक जैन उपासक का नाम;
(संथा ६१)1। ८ परिमाण-विशेष, १६२ भंगुल का एक
नाप; (इक) । ६ मज्ञा ; (ठा ४, ३)। १० पुन, सैन्य,
लश्कर ; (पण्ह १, ४; ठा ४, ३) । अर पुं ["कल]
छन्द-विशेष ; (पिंग) 1 जज न [युद्ध] यष्टियुद;
(आचा) । ^णायग प [नायक] १ दण्ट-दाता, झपराघ-

विचार-कत्ती । २ सेनापति, सेनानी, प्रतिनियत सन्य का नायक;

=+ र,
| (पष्ड १, ४; ग्ोप; कप्य ; णाया १, १) 1 ^णीह् खी
[(नीति] नीति-विशेष, अ्चुश'सन ; (ठा ६) । "पह १
[पथ] मार्ग-विशेष, सीधा मार्ग ; (सुभ्न १,१३)।
वासि प (पाश्चि न. "पाशिन्] १ दण्ड दाता; २को-
तवाल ; (राज; श्रा २५)। णय न [परोञ्छ-
नक] दण्डाकार भाद्र; (जं. £) । भीति मी]
द्गड से डरने वाला, दण्ड-भीरु ; (्राचा) । छक्ति वि
["लात] दयड लेने बाला ; (वव 4) । “वड ५ [पति]
सेनानी, सेना-परति; (सुपा ३२३) । 'वासिग, “वासिय पु
[दण्डपाशिक्र] कोतवाल; (कुप १४५; स २६५; उप
१०३१ री) । 'वोरिय इ [वीयं] राजा भरत के वशा
एकं राजा, जिसको श्रादर्श-गृह में केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था;
(स) ^रासपुं [“रस] एक प्रकार को नाच; |
(कष्पू) 1 शशय वि [भयत] दण्ड की तरह लम्बा; (कस;
श्मौप)। "यइय तर [यतिक] पैर को दणड की तरद लम्बा
फ़ैलाने वाला; (श्रौप; कष; ठा ५, १) शरश्िखग पुं [गर-
। | श्िकर] दणड-धारी प्रतीहार ; (निवू६)। (रण्णन ^
[भरण्य] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जंगल ; (पडम
। ४१,१; ५६,५)। भसणिय वि [भसनिक] दण्ड
की तरह पैर फैला कर बैठने वाला ; (कस) । देखो दंडग,
दंडय । ५11
दंडग) ऽ [दण्डक] १ कर्ण -कुग्डले नगर का एक राजा;
दंडय | (प्म १, १६)। २ दण्डाकार वाक्यशदति,
ग्रन्थांश-विशेष; (राज) । ३ भवनपति आदि चोवीस दूग्डक,
पद-विशेष ; (दं १)। ४ न, दक्षिण भारत कां एक प्रसिद्ध
जंगल ; (पडम ३१, २६) । "गिरि पुं [गिरि] पत
विशेष, (पउम ४२, १४)। देखो दंड ; (उप ८९१; .
वृह १; सुझे २, २; पडम ४०, १३.)।
दंडावण न [दण्डन] सजा कराना, निप्र कराना ; (श्रा
१४) । प |
वंडाविथ वि [दण्डित] जिसको दण्ड दिलाया गया हो
बह; (ओष ५६५ री) ।
दंडि वि [दण्डिनि] 9 दर्ड-युक्त । २ प. दण्डधारी श्रतीहारः
(कमा; जं ३)।
*दूंडि देखो दंडी; (कुप्र ४४) ।
दंड वि [द्दण्डित] जिसका सजा दी गई हो वह ; (सुपा

४६२)1
दंडिअ वि [दण्डकः] १ दण्ड वाला । ३ पु राजा, वृष ;